UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 122-126

"उच्च शिक्षा में गुणवत्ता : विषय एक : वातावरण अनेक"

डॉ.कुम्भन खण्डेलवाल
(प्राध्यापक) श्री अटल बिहारी बाजपेयी शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

डॉ.अनूप व्यास
(विभागाध्यक्ष) श्री अटल बिहारी बाजपेयी शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

सारांश :–
महाविद्यालय के आधारभूत संरचना में मुख्यरूप से भवन + स्टॉफ + शैक्षणिक वातावरण आता हैं। इस संरचना का उपयोग वह विद्यार्थी करता है जो हायर सेकेण्डरी पास करके पहली बार महाविद्यालय में प्रवेश लेता है। मप्र. में स्नातक स्तर पर एक समान पाठ्यक्रम लागू है

महाविद्यालय के आधारभूत संरचना में मुख्यरूप से भवन + स्टॉफ + शैक्षणिक वातावरण आता हैं। इस संरचना का उपयोग वह विद्यार्थी करता है जो हायर सेकेण्डरी पास करके पहली बार महाविद्यालय में प्रवेश लेता है। मप्र. में स्नातक स्तर पर एक समान पाठ्यक्रम लागू है परंतु –

- इन्दोर जैसे विकासशील जिले में व्यवसायिक वातावरण, शैक्षणिक वातावरण पूर्णतः अलग है। उज्जैन जिले में प्राथमिकताएँ अलग–अलग है। वहां का वातावरण आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति को बढावा देता है। उद्योग–धन्धों का अभाव है। वही धार, झाबुआ जिले के प्राथमिकताएँ आदिवासी पर्यावरण से प्रभावित हैं वही खण्डवा, खरगोन की प्राथमिकताएँ कृषि से प्रभावित हैं। इन वातावरण के आधार पर पाठयक्रमो का एक समान होना विद्यार्थी की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। क्या इसे प्राथमिकता की आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जा सकता है।

- सभी जिलो में मूलभूत आवश्यक सुविधाएँ जैसे सड़क, बिजली, पानी आदि भी काफी अलग–अलग हैं। जिसके कारण महाविद्यालय का शैक्षणिक वातावरण पूर्ण रूप से प्रभावित होता है। विद्यार्थी टीवी. पर विकसित वातावरण को देखता हैं। परन्तु वास्तविकता में अपने आप को इन सब सुविधाओं से वंचित पाता हें जिससे विद्यार्थी की मनोदशा पर प्रभाव पड़ता है। यह सभी बिन्दू विद्यार्थी की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं

- महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र मे विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती है। यदि परिणामों पर नजर डालें तो कुछ जिले विशेष के विद्यार्थी खेल–कुद में माहिर होते हैं तो कुछ साहित्यिक गतिविधी मे इस प्रकार अलग–अलग विद्यार्थी के जिले के आधार पर उनकी उपलब्धियां रेखांकित होती है क्योकि उनके जिलों में विशेष प्रकार की वे ही सुविधाएँ मिलती हैं।

- आज भी कुछ महाविद्यालयों में संसाधनों का पूर्ण अभाव है। इन संसाधनो में कुछ महाविद्यालयों के भवन नहीं है तो कुछ महाविद्यालयों में टिचिंग रटाफ नहीं है। कुछ महाविद्यालय में तो नॉन टिचिंग स्टाफ भी नहीं है। यह संसाधनो के अभाव युक्तियुक्तकरण नहीं होने के कारण है। इससे से भी विद्यार्थी की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है।

उच्च शिक्षा के लिए शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यार्थियो का लक्ष्य रोजगार पाना या स्वरोजगार के क्षेत्र में सफलता हासिल करना होता हैं। आपसी विचार विमर्श का विषय हैं– कॉलेज की संख्या बढ़ रही है, विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है परन्तु डिग्री प्राप्त विद्याार्थियों की गुणवत्ता हम नहीं बढ़ा पा रहे है – पाठ्यक्रम की समय परिस्थिति के अनुसार update नहीं कर पा रहे हैं।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 122-126

सभी विद्याार्थियों को पुरे मध्यप्रदेश में एक समान पाठ्यक्रम देते है। परन्तु वातावरण असमान यही अपनी गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली मूल बात है। यदि एक समान गुणवत्ता या अधिक कौशल प्राप्त विद्यार्थी चाहिये तो हमें शैक्षणिक वातावरण को समझकर पाठ्यक्रम को लागू करना होगा।

- देश की आबादी का 75% हिस्सा ग्रामीण क्षेत्र में रहता हैं।
- देश की अर्थव्यवस्था ''कृषि'' से प्रभावित हैं। ''कृषि'' व्यवस्था आज भी मानसून पर आधारित है जिसके परिणाम आज भी अनिश्चितता से भरे हुए है।
- वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पर्याप्त स्कूल एवं महाविद्यालय नही हैं। जो स्कूल एवं महाविद्यालय हैं उनमें पूर्ण आधारभूत संरचनाएँ एवं शिक्षक नही है।
- हर नागरिक विकासशील शहर में आकर पढ़ना, लिखना, बसना चाहता है जैसे इन्दौर का विद्यार्थी विदेशों में जाकर पढ़ना, लिखना एवं बसना चाहता है।

इस प्रकार उच्च शिक्षा के लिए हर विद्यार्थी अपने परिवेश से उच्च परिवेश की ओर आकर्षित होता है यह बात हर सामान्य विद्याार्थी पर लागू होती है। इन सभी तथ्यों पर व्यवसायिक एवं शैखणिक वातावरण का पूर्ण प्रभाव होता है जिससे विद्यार्थियों की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है।

परिकल्पनाएँ

1. म.प्र. के समस्त जिलों में शैक्षणिक संसाधन प्र्याप्त मात्रा में मौजूद है।
2. उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लेने वाला विद्यार्थी रोजगार का लक्ष्य रखता है या स्वरोजगार के क्षेत्र में सफलता हासिल करना चाहता है।
   विद्यार्थी के पाठयक्रम प्रादेशिक स्तर पर एक समान है।

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का आधार भी ' रोजगार, स्वरोजगार एवं शिक्षा है। परन्तु

- वर्तमान परिदृश्य में रोजगार उपलब्ध नही है।
- कृषि में आज भी अनिश्चिंतता है।
- टी.वी. के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी विकसित शहर के प्रति आकर्षित होता है।
- शिक्षा ग्रहण करने के लिए शहर की ओर आकर वही बस जाता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन बढ़ने से 'कृषि' व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

गुणवत्ता के दृष्टिकोण से विद्यार्थियों में रोजगार, स्वरोजगार के प्रति जागरुकता आवश्यक है जिसके परिणाम स्वरुप ग्रामीण क्षेत्र का विद्यार्थी विकसित शहर की ओर आकृषित होना आवश्य संभावी है। म.प्र. के सभी 50 जिलों में कुल 1172 महाविद्यालय हैं जिसमें से 367 शासकीय महाविद्यालय, 77 अनुदान प्राप्त महाविद्यालय एवं 728 गैर अनुदान प्राप्त महाविद्यालय हैं।

कुल 1172 महाविद्यालयों की स्थिति (जिलेवार)

	शासकीय	अनुदान प्राप्त	गैर अनुदान प्राप्त
अलीराजपूर	03		
अनुपुर	04		04
अशोक नगर	04	01	07
बड़वानी	07		04
बालाघाट	10		06
बैतुल	08		17

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 122-126

भिण्ड	09	04	54
भोपाल	12	07	59
बुरहानपुर	02	02	04
छतरपुर	08	02	19
छिन्दवाड़ा	12	04	23
दमोह	07		06
दतिया	05		16
देवास	09		11
धार	09		07
डिंडोरी	02		01
गुना	06		07
ग्वालियर	11	07	69
हरदा	02	01	07
होशंगाबाद	10	01	06
इन्दौर	11	11	70
जबलपुर	12	12	28
झाबुआ	04		01
कटनी	05	02	09
खण्डवा	04		05
खरगोन	07		08
मण्डला	06		03
मंदसौर	05	01	09
मुरैना	06	02	46
नरसिंहपुर	06	02	09
नीमच	06	02	06
पन्ना	09		02
रायसेन	09		18
राजगढ़	07		05
रतलाम	07		08
रीवा	14	07	18
सागर	12	03	19
सतना	11	02	17
सिंहोर	10		15
सिवनी	07		13
शहडोल	07		07
शाजापुर	09		09
शियोपुर	03		07
शिवपुरी	06		10
सीधी	07		06
सिंगरॉली	07		08
टिकमगढ	06		02
उज्जैन	12		17

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 122-126

उमरिया	02		01
विदिशा	09		19
कुल	**367**	**77**	**728**

विवेचना

उपरोक्त आँकडों के आधार पर –

- शासकीय महाविद्यालय से दुगूनी संख्या निजी महाविद्यालयों की है।
- इन्दौर में 11 शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा 81 निजी महाविद्यालय है।
- ग्वालियर में 11 शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा 76 निजी महाविद्यालय हैं।
- भोपाल में 12 शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा 66 निजी महाविद्यालय हैं।
- भिंड में 09 शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा 63 निजी महाविद्यालय हैं।
- जबलपुर में 12 शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा 40 निजी महाविद्यालय हैं।
- मुरैना में 06 शासकीय महाविद्यालयों की अपेक्षा 48 निजी महाविद्यालय हैं।
- वर्तमान शासकीय महाविद्यालय में से कुछ महाविद्यालय में तो आज भी स्वयं का भवन पर्याप्त स्टाफ नहीं है। यह सभी शैक्षणिक वातावरण को प्रभावित करते है।

पर्याप्त महाविद्यालयों की संख्या के बावजूद 40% विद्यार्थी उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश नही ले रहे है अर्थत 700000 विद्यार्थी वर्ष 2013 में 12वी में पास हुए लेकिन मात्र 367000 विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया है। बाकि 333000 विद्यार्थी का उच्च शिक्षा से संबंध है या नही विचारणीय प्रश्न है। ? जो 36700 विद्यार्थियो ने महाविद्यालय में प्रवेश लिया हैं उनको हम जो पाठ्यक्रम पढ़ा रहें हैं उसके परिणाम स्वरुप –

विद्यार्थियो से चर्चानुसार एवं अनुभव के आधार

आज भी विद्यार्थियो को निम्नलिखित बातों में व्यक्तिगत कौशल के दृष्टिकोण से कमजोर पाते हैं। उदाहरण के लिये –

1. आजार में रोजगार क्या करना है उन्हे पता नही।
2. किस रोजगार या स्वरोजगार के योग्य है उन्हे पता नही।
3. यदि किसी भी रोजगार या स्वरोजगार की ओर कदम बढ़ाने है तो पुनः उस रोजगार संबंधी ट्रैनिंग
4. लेना होगी या पढ़ाई करना होगी। उन्हे पता नही।
5. व्यक्तित्व संबंधी मूल बातें –
    - सम्प्रेषण में कमजोर है।
    - तकनीकी जानकारी विषय संबंधी है नही।
    - नयी–नयी जानकारियों से अवगत नही है।
    - खेल–कूद में भी पिछड़े हुए है।
    - शारीरिक रुप से भी कमजोर है।
6. वाणिज्य के पाठ्यक्रम की चर्चा करें तो जो 1981 में हम पढ़ते थे वैसा ही पाठ्यक्रम आज भी पढ़ाया जा रहा हैं, जबकि वाणिज्य की दुनिया पूरी तरह से विकास की धूरी है।
7. आज के परिपेक्ष्य में विद्यार्थी को ''ज्ञान'' की सही दिशा की भुख हैं, रोजगार की जरुरत हैं,

स्वरोजगार की प्रेरणा की जरुरत है, क्योंकि लगभग सभी डिग्री प्राप्त विद्यार्थी डिग्री लेने के बाद .....

- पुनः किसी प्रशिक्षण संस्था को ज्वॉइन करता है– रोजगार के लिए, स्वरोजगार के लिए।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 122-126

- उसके पढ़ने की अदस्य शक्ति है तभी वह पढ़ने के लिए फिर से कक्षा ज्वॉइन करता है परन्तु हमारे पाठ्यक्रम में वह विषय वस्तु से दूर है।
- डसी विषय वस्तु को हमारे पाठ्यक्रम में शामिल करें तो उस विद्यार्थी को अलग से अन्य कोई प्रशिक्षण लेने की जरुरत नही है।
- डिग्री प्राप्त विद्यार्थी की संख्या बढ़ती जा रही है परन्तु उन्हे बाजार में रोजगार या स्वरोजगार के लिए अनुपयुक्त माना जाता है।
- डिग्री लेने के बाद विद्यार्थी को रोजगार विशेष में जाने के लिए पुनः प्रशिक्षण ग्रहण करना पड़ता है।
- व्यक्तित्व विकास की कक्षाओं में भी अलग से फीस चुकाकर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार होना पड़ता है।
- महाविद्यालयों के प्रति युवा वर्ग का सम्मान घटता जा रहा है। और अपने आप को वह ठगा सा महसूस कर रहा है।
- महाविद्यालयों में प्रवेश से डिग्री प्राप्त करने तक कैरियर के तीन महत्वपूर्ण वर्ष बिना किसी सफलता के गंवा बैठता है।
- विद्यार्थी हायर सेकेण्डरी पास करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु कॉलेज में प्रवेश लेता है तो –
- सभी विद्यार्थियों का लक्ष्य एक समान ही होता है
- अच्छे से अच्छे रोजगार को हासिल करना

  या

  स्व–रोजगार को सफल बनाना
- क्या हमारा उच्च शिक्षा विभाग सभी विद्यार्थियों को प्रवेश देता ही है। इस नीति के स्थान पर मेरिट के आधार सीमित विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जा सकता है।
- सेमित विद्यार्थी होने के बाद स्टॉफ की उनके प्रति जवाबदारी बढ़ जाती है और दिन–प्रतिदिन प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान दिया जा सकना संभव होगा।
- शैक्षिणक पाठ्यक्रम में लक्ष्य आधारित पढ़ाई पर ही ध्यान दिया जाए। जिससे पढ़ाई कम और सीखना ज्यादा की वृत्ति को बढ़ावा दिया जा सके।
- शैक्षिणक पाठ्यक्रम के साथ गैर शैक्षणिक गतिविधीयों को बढ़ाया जाये जो प्रायः लुप्त सी हो गई है। प्रत्येक विद्यार्थी की भागीदारी सुनिश्चित की जावे।
- व्यक्तित्व विकास हेतु सम्प्रेषक, कम्प्युटर को अनिवार्य शिक्षा में शामिल किया जावे।
- खेल–कूद हेतु प्रत्येक विद्यार्थी किसी भी एक खेल में प्रवीणता का प्रमाण पत्र अवश्य हासिल करे।

इन सुझावों को अमल में लाने के लिए अलग से कोई खर्च की कोई आवश्यकता नही है केवल सोच को विकसित कर योजना बनाने की है। जो विद्यार्थी गुणानुक्रय के आधार पर प्रवेश नही ले पायेगे सया जो महाविद्यालय में नियमितअध्यन हेतु नही आ सकते है वे सभी पत्राचार के माध्यम से डिग्री हासिल कर सकते है। बी.कॉम–बी.ए.–बी.एस.सी. की डिग्री वाले महाविद्यालय को भी तकनीकि महाविद्यालय, मेनेजमेंट महाविद्यालय की भाँती ही चलाना होगा।

संदर्भ

- प्रतियोगिता दर्पण
- दैनिक भास्कर (कैरियर वि" ोशांक)
- नई दुनिया (युवाम)